Navchetana Homilies

March 17, 2019

Gen 7:6-24

Josh 5:13-6:5

Rom 7:14-25

Mt 20:17-28

उपवास काल का तीसरा रविवार

सेवक बनों

कुछ साल पहले रीडर्स डाईजेस्ट पत्रिका में एक घटना प्रकाशित हुई थी। घटना इस प्रकार है। न्यूयार्क शहर में एक विधवा रहती थी। अपने पति और पुत्र की मृत्यु के बाद वह बिल्कुल अकेली हो गई थी। समय नहीं कटता था। उसी बोरियत से बचने के लिए वह कभी–कभी फिल्म देखने जाया करती थी। टिकट खिड़की के पास भीड़ के कारण कभी–कभी उसे बहुत देर तक लाईन में खड़े रहना पड़ता था। एक दिन बहुत समय तक खड़े रहने से उसे चक्कर आ गया और वह ज़मीन गिर गई। पास ही खड़े एक युवक ने उसे अंदर ले जाकर उसकी सेवा की। होश आने पर उसने तुरंत ही अपने टिकट के बारे में पूछा। उस युवक ने उसके लिए टिकट खरीदा और सिनेमा हाल के भीतर ले जाकर उसे उसकी सीट

पर बिठाया वह टिकट जाँचकर्ता था। वह फिल्म के बीच–बीच में उस विधवा के पास जाकर उसका हाल पूछता रहा। फिल्म खत्म होने के बाद उसने उस विधवा से कहा– "माँजी! इतनी भीड़ भरी लाईन में कभी नहीं खड़े होना। मैं आपके लिए टिकट खरीद दूँगा।" उसके बाद कई बार उसने उनके लिए टिकट भी खरीदा। उस युवक को विधवा स्त्री ने कई बार अपने घर भोजन के लिए बुलाया पर वह कभी नहीं आया। कुछ दिनों के बाद उसे कहीं और अच्छी नौकरी मिली और वह उस जगह को छोड़कर चला गया। कुछ साल बाद वह विधवा स्त्री मर गयी। उसने अपनी वसियत में लिखा था– "उस युवक ने मेरी बहुत मदद की। भीड़ में मुझे कोई परेशानी न हो इस बात का वह ध्यान रखता था। मैंने उसे कई बुजुर्ग लोगों की इसी प्रकार से मदद करते देखा है। वह किसी प्रतिफल की इच्छा के बिना ही यह कार्य करता था। इसलिए इस वसियत के अनुसार मैं उसको डेढ़ लाख डॉलर देती हूँ।"

सच है कि उस युवक ने किसी लाभ की इच्छा से उसकी सेवा नहीं की थी, फिर भी उसे उसकी सेवा का पुरस्कार मिला। निःस्वार्थ भाव से की गई सेवा हमेशा इसी प्रकार से पुरस्कृत नहीं होती, फिर भी उसका महत्व तो है ही।

सुसमाचार के इस अंश में येसु अपने शिष्यों को निःस्वार्थ सेवा के महत्व के बारे में बताते हैं संसार का हरेक व्यक्ति महान्

और बड़ा होना चाहता है। सभी लोग ऊँचे पद, सम्मान, धन और सम्पत्ति की प्राप्ति का सपना देखते है। जेबेदी का पुत्र भी येसु के चेलों के बीच अपने ऊँचे पद को सुरक्षित कराना चाहता था। उसको चाहिए था येसु के राज्य में उनके दायें और बायें की कुर्सियाँ। दूसरे शिष्यों ने जब इस बात को सुना तो वे उन दोनों पर क्रोधित हो गये। क्रोध को शांत करते हुए येसु ने उन्हें सत्ता और प्रभुत्व तथा महानता और बड़प्पन की नई परिभाषा सिखायी।

येसु की इस शिक्षा के तीन भाग हैं।

1. महानता और प्रभुत्व के बारे में लोगों की आम धारणा।
2. इनके बारे में येसु की मौलिक विचार धारा।
3. इस नये आदर्श का उनके अपने जीवन में सार्थक और सशक्त उदाहरण।

पहले–पहले वह सत्ताधारी और अधिपति लोगों के बारे में जो आम धारणा है उसकी आलोचना करते हैं। सत्ताधारी, अधिपति, मालिक, प्रभु इसका अर्थ क्या है? सत्ता संभालने वाला है सत्ताधारी। प्रभु और मालिक के नौकर या गुलाम है उनके अधीन रहने वाले लोग। सत्ताधारी अपने अधीन रहने वाले लोगों पर अधिकार जताते हैं। येसु के श्रोताओं के मन में अधिपति और सत्ताधारी लोगों का जो चित्र उमड़ा था वह रोम के साम्राट और गवर्नर का था। वे सोचते थे कि येसु भी उन्हीं

के समान साम्राज्य स्थापित करेंगे। इसलिए उनके राज्य में वे अपने पद का आरक्षण कराना चाहते थे।

येसु ने अपनी विचारधारा उनके सामने रखी। अधिपति और सत्ताधारी लोगों के बारे में कहने के बाद उन्होंने कहा– "तुम लोगों में ऐसी बात नहीं होगी।" येसु एक मौलिक सामाजिक क्रांति करना चाहते थे। उन्होंने कहा– "जो तुम लोगों में बड़ा होना चाहता है वह तुहारा सेवक बनें और जो तुम में प्रधान होना चाहता है वह तुम्हारा दास बनें।" नेतृत्व और महानता के बारे में उनका दृष्टिकोण यही है। नेता और अधिकारी दोनों को सेवक बनने की जरूरत है तभी वे नेतृत्व सम्भाल सकते हैं और महान् भी बन सकते हैं।

सेवक अपनी इच्छा से ज्यादा जिनकी वह सेवा करता है उनकी इच्छा को प्रमुखता देता है। बशर्ते दास और सेवक नम्रता के साथ काम करता है।

मदर टेरेसा कहती हैं "मैं इन निराश्रितों और अनाथ बच्चों की सेवा करने के लिए ही भेजी गई हूँ।" अपनी जिन्दगी में उन्होंने इसे कर भी दिखाया। उनकी जिन्दगी की एक घटना यहाँ स्मरणीय है। वे अपने अनाथालय के बच्चों के लिए घर–घर जाकर भीख मांगती थी। एक बार उन्होंने एक धनी व्यापारी की दुकान के सामने जाकर हाथ फैलाया और अपने बच्चों के लिए कुछ देने को कहा। दुकानदार ने पहले तो उनकी हँसी

उड़ायी और बाद में उनके हाथ में थूंक दिया। उन्होंने उस हाथ को अपनी छाँती से लगाकर मुस्कुराते हुए कहा– "यह तो हुआ मेरे लिए। अब मेरे बच्चों के लिए कुछ दीजिए।" और इस तरह उन्होंने अपना दूसरा हाथ दुकानदार के सामने फैला दिया। उस दुकानदार की आँखें खुली की खुली रह गई। उसने मदर टेरेसा के पावँ छूकर उनसे क्षमा माँगी और उन बच्चों के लिए कुछ भी करने के लिए वह तैयार हो गया। दुकानदार के लिए एक स्मरणीय दिन व क्षण बन गया। मदर टेरेसा की महानता को देखकर उस समय की प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने कहा "उस साध्वी महिला के सामने मैं बहुत छोटी और निस्सार हूँ।"

महानता के बारे में येसु का आदर्श केवल काल्पनिक नहीं था या उन्होंने उसे सिर्फ औरों के लिए ही नहीं कहा था। उसका प्रथम उदाहरण वे खुद ही थे। उन्होंने कहा– "मानव पुत्र भी अपनी सेवा कराने के लिए धरती पर नहीं आया है, बल्कि सेवा करने और बहुतों के उद्धार के लिए अपने प्राण देने आया है।" ऊँचे पद के लिए अपने चेलों के झगड़े के कुछ क्षण पहले येसु ने कहा था "मानव पुत्र महायाजकों और शास्त्रियों के हवाले कर दिया जायेगा। वे उसे प्राणदण्ड की आज्ञा सुनाकर गैर–यहूदियों के हवाले कर देंगे, जिससे वे उसका अपहास करें, उसे कोड़े लगाये और क्रूस पर चढ़ाये।" (मत्ती 20:18)

येसु की जिन्दगी हमारे सामने तीन उदाहरण प्रस्तुत करती है। विनम्र सेवाभाव, आत्मबलिदान तक पहुँचता आत्मत्याग और उससे प्राप्त उसकी महानता।

संत पौलुस ने फिलिप्पियों के लिए जो उपदेश लिखा है वह हमारे लिए भी सार्थक है– "आप लोग अपने मनोभावों को ईसा मसीह के मनोभावों के अनुसार बना लें। वह वास्तव में ईश्वर थे और उनको पूरा अधिकार था कि वह ईश्वर की बराबरी करें। फिर भी उन्होंने दास का रूप धारण करके अपने को दीनहीन बना लिया– मरण, क्रूसमरण तक आज्ञाकारी बनकर उन्होंने अपने को और भी दीन बना लिया। इसलिए ईश्वर ने उन्हें महान बनाया और उनको वह नाम प्रदान किया जो सब नामों में श्रेष्ठ है। (फिलि 2:5–1)

महानता और अधिकार के बारे में येसु का यह दृष्टिकोण हम भी अपनायें और अपने मनोभावों को येसु के अनुसार बना लें।

फादर जेम्स एम एल सि एम आई